International Journal of Jyotish Research: 2019; 4(1): 01-04

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2019; 4(1): 01-04
© 2019 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 01-11-2018
Accepted: 05-12-2018

डॉ0 विपित्य कुमार कटियार
एसोसिएट प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान विभाग, ब्रह्मानन्द परास्नातक महाविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 विपित्य कुमार कटियार
एसोसिएट प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान विभाग, ब्रह्मानन्द परास्नातक महाविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

कृष्णमूर्ति पद्धति (KP): जन्म, दशा और गोचर

डॉ0 विपित्य कुमार कटियार

सारांश
भारतीय ज्योतिष में मुख्यतः और मूलतः ज्योतिष की दो धारायें प्राचीन काल से विद्यमान हैं, जिन्हें पराशर और नाड़ी ज्योतिष के नाम से जाना जाता है। इसके साथ ही जैमिनी ज्योतिष भी है। नाड़ी ज्योतिष मुख्यतः दक्षिण भारत में और पराशर ज्योतिष उत्तर भारत में प्रचलित है। प्रो0 कृष्णमूर्ति का जन्म दक्षिण भारत में हुआ और उन्होंने पराशर ज्योतिष से प्रारम्भ करते हुये एक अलग विधा का अविष्कार किया जिसे कृष्णमूर्ति पद्धति या KP कहते है। प्रस्तुत लेख कृष्णमूर्ति पद्धति के विभिन्न आधार स्तम्भों एवं उनकी मौलिक संकल्पनाओं का पारम्परिक ज्योतिष के सन्दर्भ में समग्र विवेचन है। यह लेख कृष्णमूर्ति पद्धति की पारम्परिक ज्योतिष से भिन्नताओं एवं कृष्णमूर्ति पद्धति की सीमाओं की विवेचना भी करता है।

कूट शब्दः नक्षत्र स्वामी, सवलार्ड, कृष्णमूर्ति आयनान्श, निरयन भावचलित, KP

1. प्रस्तावना
प्रो0 के0एस0 कृष्णमूर्ति जी ने परम्परागत ज्योतिष के फलित सूत्रों को वर्तमान परिपेक्ष में परिमार्जित किया और ''सवलार्ड'' की अद्भुत अवधारणा के द्वारा एक नई फलित विद्या को जन्म दिया जिसे अब उनके नाम पर ही कृष्णमूर्ति पद्धति या KP के नाम से जाना जाता है। भारत में ही नही वरन् पूरे विश्व में भारतीय ज्योतिष, को कृष्णमूर्ति पद्धति के अन्वेशक एव् अभ्यासक अनवरत शोध से निखारते जा रहे है। प्रस्तुत लेख KP के प्रमुख सूत्रों का एक समग्र विवेचन है। कृष्णमूर्ति ज्योतिष प्रणाली में कुण्डली बनाते समय निरयन भावारंभ तरीके से सभी बारह भाव स्पष्ट किये जाते है एव् कृष्णमूर्ति आयनान्श का प्रयोग किया जाता है।[1,2,3,] KP पराशर ज्योतिष से कई मायनों में समानता रखते हुये भी मौलिक रूप से कई मानो में भिन्न है। उदाहरणार्थ सबलार्ड और भावों को समूहीकरण केवल इसी पद्धति के फलित में उपयोग में लाये जाते है। इसके साथ ही KP से घटनाओं के समय निर्धारण को सूक्ष्म रूप से निकाला जा सकता है।

2. जन्म कुण्डली :
2.1 KP का मूल नियम है ''ग्रह अपने नक्षत्र का फल करेगा''[3]
इस नियम का अर्थ है कि ग्रह अपने नक्षत्र के आधीन है, जन्म के समय भी था और गोचर में भी है। परम्परागत ज्योतिष में फलादेश के लिय ग्रह की राशि स्वामित्व, युति, दृष्टि, भाव आदि पर विचार किया जाता है या संक्षेप में कहे भाव, भावेश और कारक के आधार पर भविष्यवाणी की जाती है। कृष्णमूर्ति जी भी प्रारम्भ में इसी सिद्वान्त से फल करते थे, लेकिन उन्होने पाया कि दो ग्रह एक ही राशि, एक ही भाव में बैठने पर भी फल अलग–अलग करते है और कभी तो एकदम विपरीत फल करते है। शोध के उपरान्त उन्होनें पाया कि दो ग्रहों का एक ही राशि, एक ही भाव में बैठने से, नक्षत्र और इसकी चरण अलग–2 होने पर फल अलग होते है। अब प्रश्न उठता है कि यदि ग्रह अपने नक्षत्र का फल करेगा तो उस ग्रह के राशि और उसकी स्वामित्व वाली राशियों का क्या होगा, क्या ग्रह इतना भी स्वतन्त्र नही है ? यहॉ पर एक बात विशेष रूप से ध्यान रखने की और नियम को पुनः समग्र रूप से देखने की है। ग्रह अपने नक्षत्र का फल करेगा यह सही है लेकिन वह फल अपने स्वामित्व वाली राशियों और जिस भाव में बैठा है वहॉ से फल लायेगा और नक्षत्र स्वामी द्वारा फल करेगा। इस आधार से उच्च ग्रह, स्वक्षेत्री ग्रह, दिग्वली ग्रह, नीच ग्रह, राजयोगकारक ग्रह, 6,8,12 भाव के स्वामियों के फल आदि में अन्तर आ जायेगा। उच्च का ग्रह, यदि कुण्डली में नीच के ग्रह के नक्षत्र में या 6,8,12 भाव में बैठे ग्रह के नक्षत्र में हो तो उच्च का ग्रह अपनी उच्च स्थित का फल नही कर पायेगा। इस नियम के आधार पर KP में ग्रह बलाबल उसके नक्षत्र स्वामी (स्टार लार्ड) की स्थिति से निर्धारित होता है, न कि ग्रह की अपनी स्थिति से। [1]

2.2. ''सब लार्ड निर्णायक होता है''

विंशोत्तरी दशा 120 वर्ष की होती है जिसे सूर्य को 06 वर्ष, चन्द्रमा को 10 वर्ष, मंगल एवं केतु को 07 वर्ष, बुध को 17 वर्ष, बृहस्पति को 16 वर्ष, शनि 19 वर्ष, शुक्र 20 वर्ष और राहु को 18 वर्ष है। यानि 120 वर्ष में सभी ग्रहों के दशा अन्तराल समान नहीं है। इस आधार पर कृष्णमूर्ति जी ने नक्षत्र की अवधि 13^0 $20'$ को नौ ग्रहों में उनके दशा अन्तराल के अनुपात में बांटा और इसे 'सबपीरियड'[3] (Sub Period) नाम दिया और इनके स्वामियों को सबलार्ड (Sublard) नाम दिया। 27 नक्षत्र और हर नक्षत्र के 9 'सबपीरियड', इस प्रकार 27×9=243 'सबपीरियड' प्राप्त हुये। चूकि सूर्य और गुरू के 'सबपीरियड' के क्षेत्र दो राशियों में थे इन्हें अलग–2 गिना गया एवं 6, 'सबपीरियड' को इसमें जोड दिया, इस प्रकार (243+6)=249 'सबपीरियड' या सबलार्ड प्राप्त हुये। 249 सवलार्ड ही कृष्णमूर्ति जी का वर्तमान ज्योतिष जगत में सबसे महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान योगदान है। 249 'सबलार्ड' ही कृष्णमूर्ति प्रश्न कुण्डली[6] का आधार है। 'सबलार्ड' की संकल्पना के गणतीय रूप को सन्दर्भ संख्या 3,7,11 और 12 में विस्तृत रूप से देखा जा सकता है।

कृष्णमूर्ति जी ने पाया कि दो ग्रहों के एक ही नक्षत्र और एक चरण में बैठने पर भी फल अलग–अलग होता है। 'सबलार्ड'/'उपनक्षत्र' बदल जाने पर एक साथ, एक ही नक्षत्र चरण में बैठे ग्रहों का फल बदल जाता है। KP का मूल नियम है कि ग्रह अपने नक्षत्र का फल करता है लेकिन यह फल जातक के लिए अच्छा या बुरा है इसका निर्णय ग्रह का 'सबलार्ड' करता है। यदि ग्रह के नक्षत्र द्वारा दर्शाये जा रहे फल का, ग्रह का 'सबलार्ड' भी समर्थन करता है तो फल अच्छा होगा यदि 'सबलार्ड' विरोधी भावों का दर्शा रहा है तो फल खराब होगा। किसी भाव से उसका 12वा भाव विरोधी भाव है।

2.3 भाव मे बैठा ग्रह भाव स्वामी से ज्यादा बलशाली है [3, 5, 7, 8, 9, 10] (Occupant is stronger than owner)

कुण्डली के भाव में बैठा ग्रह, उस भाव के स्वामी से ज्यादा महत्वपूर्ण है। इस प्रकार से भी समझा जा सकता है। मान लीजिये आप के पास शहर मे दो मकान है और आप एवं किसी दूसरे शहर में किराये पर रह रहे है। अपने आप को ग्रह और अपने स्वामित्व वाले मकानों को भाव मान लीजिये। यदि आप ने अपने दोनो मकानों को किराये पर उठा दिया है तो किरायेदार आप से मजबूत स्थिति में है, इन मकानों के समस्त क्रिया कलापों पर उसका अधिकार ज्यादा है, आप मनोवैज्ञानिक रूप से महसूस करिये कि आप दो मकानों के मालिक है। शहर में वापस आने पर किरायेदारों की अनुमति से ही आप मकान में प्रवेश पा सकते है।।

भाव में बैठे ग्रह के नक्षत्र मे आया ग्रह, उस भाव के लिये सबसे महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि ''ग्रह अपने नक्षत्र का फल करेगा''।

2.4 कारक/सूचक [11, 12, 13] (Significator)

परम्परागत ज्योतिष में ग्रहो के नैसर्गिक कारक होते है जैसे विवाह के लिए शुक्र, आजीविका के लिये शनि इत्यादि। जन्म कुण्डली में भावेश के आधार पर तत्कालिक कारक भी लिये जाते है। भृगु नन्दी नाड़ी मे कारकों को विशेष महत्व दिया गया है। अब प्रश्न उठता है कि कारक/सूचक या कार्येश ग्रह क्या है ६ समारोह का आयोजन जिस हेतु किया जाता है। वह हेतु' ही कारक है। विवाह के लिये वर–वधु अनिवार्य है। वर–वधु की अनुपस्थिति में समारोह हो सकता है, लेकिन इसे विवाह समारोह नही कहा जा सकता। कारक बनाने का कृष्णमूर्ति जी का तरीका, परम्परागत ज्योतिष से भिन्न है। संक्षेप में कृष्णमूर्ति पद्वति से किसी भाव के कारक इस प्रकार बनाये जाते है –

1. भाव में बैठे ग्रह के नक्षत्र मे बैठा ग्रह
2. भाव में बैठा ग्रह
3. भावाधिपति के नक्षत्र में बैठा ग्रह
4. भावाधिपति

इसके अतिरिक्त उपरोक्त ग्रहो की युति दृष्टि एवं भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह भी उस भाव के कारक/सूचक या कार्येश ग्रह होते है। छाया ग्रहों (राहु एवं केतु) के सम्बन्ध में कार्येश बनाने के नियम अलग है। छाया ग्रहों के लिए युति, दृष्टि का महत्व सर्वोपरि है। कृष्णमूर्ति जी का कहना है कि छाया ग्रहों को कार्येश के रूप सबसे अधिक महत्व देना चाहिए। किसी भी भाव द्वारा संकेलित मामले या मामलों का निर्धारण उस भाव के कारक द्वारा किया जाता है।

2.5 भावों का समूहीकरण [11, 12, 13, 14] (Goruping of houses)

कृष्णमूर्ति जी ने किसी सम्भावित घटना पर विचार करने हेतु 'भावो के समूह' का निर्धारण किया। इसके लिए उन्होनें एक मुख्य भाव और उसके सहयोगी भावों का समूह बनाया। उदाहरण के लिये विवाह हेतु मुख्य भाव सॉतवा और सहयोगी भाव दूसरा (परिवार भाव) और ग्यारहवा(लाभ भाव) है। दूसरा भाव धनभाव है, अतः परिवार के किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी। अलगाव एवं तलाक हेतु इनके विरोधी भाव 1,6,10 है। अब प्रश्न है कि सॉतवा भाव विवाह के साथ–2 अन्य कार्यो का भी है। इस हेतु कृष्णमूर्ति जी ने नैसर्गिक कारक को लिया। अतः विवाह हेतु 7,2,11 और शुक्र। सन्तान के लिये 5,2,11 और बृहस्पति। विदेश यात्रा के लिए 3,9,12 और चन्द्रमा। शिक्षा के लिए 4,9,11 और बुध एवं बृहस्पति।

2.6 विशेष (Special) [11, 12]

कृष्णमूर्ति जी ने 2,3,4,6,9,10,11 भावों को जातक की इच्छापूर्ति के लिए विशेष महत्व दिया। इसी प्रकार 8,12,5 भाव सातवें भाव से दूसरे, छठे और ग्यारहवा भाव होने के कारण, लग्न के लिए विरोधी भाव है। इसके कुछ अपवाद भी है।

भाव का 'सबलार्ड' भाव से सम्बन्धित सभी विषयों के लिये निर्णायक है। उस भाव से सम्बन्धित कारक, उस भाव के सबलार्ड के अधीन और नियंत्रण में है अपना निर्धारित फल देते है। कारक किसी घटना का स्त्रोत बताता है। कारक के स्वामित्व वाले भाव विशेष रूप से घटना के स्त्रोत के रूप में कार्य करते है। कारक अपने नक्षत्र स्वामी का फल करता है। अतः नक्षत्र स्वामी उन भावों से सम्बन्धित विषयों का 'सूचक'' बन जाता है , जिस भाव में नक्षत्र स्वामी बैठा होता है, और जिन भावों का स्वामी होता है, या जिन भावों को देख रहा होता है। सूचक का सबलार्ड, सूचक के नक्षत्र स्वामी से सम्बन्धित मामलों का निर्धारक और नियंत्रक है। यदि सूचक का सबलार्ड और नक्षत्र स्वामी, परस्पर सहयोगी भावों के कारक है तो सूचक का फल उस भाव के लिये अच्छा होता है। अन्यथा विपरीत फलों की प्राप्ति होती है। परम्परागत ज्योतिष में पंचम भाव, त्रिकोण स्थान होने के कारण शुभ माना जाता है। कृष्णमूर्ति जी के अनुसार पंचम भाव, सातवें भाव के लाभ स्थान होने के कारण लग्न के लाभ की दृष्टि से अच्छा नहीं है। अब प्रश्न उठता है कि पंचम भाव उच्च पद, संतान आदि के लिये भी है। अतः यह लग्न के लिये अच्छा क्यों नहीं ६ जब पंचम भाव से संतान का विचार किया जायेगा तब पंचम भाव के साथ लाभ स्थान का भी जुड़ाव होना चाहिये जैसे– यदि संतान प्राप्ति के समय निर्धारण हेतु हमें 1,2,5,11 भाव के सूचकों की दशा चुननी होगी। संतान भाव, सप्तम भाव से लाभ स्थान है अतः इस प्रकरण में यह अपवाद स्वरूप शुभ है। कृष्णमूर्ति पद्धति में भाव आरम्भ का 'सबलार्ड' ही उस भाव के सम्बन्ध में सभी शुभ/अशुभ फल का प्रदाता है।

3. दशा [3, 7, 8, 15]

कृष्णमूर्ति जी ने समय निर्धारण हेतु विशोन्तरी दशा को प्रयोग किया। किसी भी भाव से सम्बन्धित फल उस भाव के सूचकों की दशा, अन्तर, प्रत्यन्तर, सूक्ष्म में प्राप्त होगे। सूचक का सबलार्ड सिर्फ ये निर्धारित करेगा कि मिलने वाले फल अच्छे है या बुरे। इस सूत्र को निम्न उदाहरण से स्पष्ट किया जा रहा है।

उदाहरण : जन्म : 7–7–1912, समयः 20:42 (I.S.T.) स्थान – 23^0 N2′ , 72^0 E 35′ Ayanamsa – 22^0 32′ जातक 8–6–1970 को सेवानिवृत्ति हुआ। कृष्णमूर्ति पद्वति के अनुसार सेवानिवृत्ति (Retirement) हेतु 1,5,9,12 भाव के सूचको की दशा, अन्तर प्रत्यन्तर होना चाहिए। जातक दिनांक 8–6–1970 को म0–बुध–शनि की दशा–अन्तर प्रत्यन्तर मे सेवानिवृत्त हुआ।

	ग्रह	स्टार लार्ड	'सबलार्ड'
दशा स्वामी	म0 (11वें भाव का स्वामी)	केतु (बुध का प्रतिनिधि) 6वें एवं 9वें भाव का स्वामी	शुक्र (5वें भाव का स्वामी)
अन्तर स्वामी	बुध (6वें भाव का स्वामी)	शनि (1व 2 वें भाव का स्वामी)	राहू (बृहस्पति का प्रतिनिधि एवं 12वें का स्वामी)
प्रत्यन्तर स्वामी	शनि (1 व 2 भाव का स्वामी)	सूर्य (शुक्र मे युति 5 व 10वें भाव का स्वामी)	केतु

संयुक्त दशा स्वामी मंगल, बुध, शनि 11,6,2 के स्वामी है अतः नौकरी को स्त्रोत के रूप में दर्शा रहे है।
दशा स्वामी मंगल 9 का सूचक है, बुध लग्न का सूचक है और शनि 5 का सूचक है। इनके सबलार्ड भी 5,12,9 के सूचक है। अतः नक्षत्र लार्ड और सबलार्ड परस्पर सहयोगी है अतः सेवानिवृत्ति हुई।
''ग्रह अपने राशि से फल लाता है और नक्षत्र स्वामी के द्वारा फल देता है, सबलार्ड निर्धारित करता है कि फल अच्छा है या बुरा है। ''
सूचक किसी भी समय दो तरह से व्यवहार करते है जातक के लिये अच्छे और जातक के सम्बन्धियों के लिए बुरे या जातक के कुछ मामलों के लिये और कुछ के लिए बुरे।
किसी भी भाव के लिए कई सूचक हो सकते है अतः दशा निर्धारित, करते समय उक्त सूचको को हटा देते है जो विरोधी भाव के भी सूचक है।

3. गोचर [5]

जन्म कुण्डली में सम्भावित घटना, घटना के सूचकों की दशा, अन्तर, प्रत्यन्तर में तब घटती है जब गोचर इसकी अनुमति देता है। घटना का माह सूर्य के गोचर से, दिन चन्द्रमा के गोचर से, समय लग्न से एवं अति सूक्ष्म समय निकालने के लिए लग्न के सबलार्ड का प्रयोग किया जाता है। गोचर में जब दशा, अन्तर, प्रत्यन्तर स्वामी एक दूसरे के नक्षत्र या उप नक्षत्र मे आते है और उसी समय सूर्य, चन्द्र भी दशा, अन्तर, प्रत्यन्तर स्वामियों के नक्षत्र से गोचर करता है तब सम्भावित घटना घटती है।
इसी प्रकार किसी भाव के संयुक्त स्वामी (राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, सबलार्ड) का दशा, अन्तर, प्रत्यन्तर आता है तो भाव चार्ज हो जाता है। सूर्य और चन्द्र गोचर संयुक्त स्वामियों के नक्षत्र पर जाते है तब उस भाव से सम्बन्धित घटना घटती है।
दशास्वामी, अन्तर दशा स्वामी, गोचर में जिस भाव से गोचर में भ्रमण करते है उस भाव का सबलार्ड जहॉ का सूचक है उस भाव से सम्बन्धित घटना घट सकती है।

4. सीमायें

कृष्णमूर्ति पद्वति में जन्म समय का सही होना अतिआवश्यक है क्योकि भावों के सबलार्ड बदल जाने से फलित में गलतियॉ होती है। अतः भावों के सबलार्ड के आधार पर फलित करने से पहले जन्म समय का संशोधन (B.T.R.) आवश्यक है। ग्रहों के सबलार्ड में अपेक्षाकृत त्रुटि होने की सम्भावना बहुत कम है अतः सूचकों के आधार पर फलित बहुधा सही पाया गया है। वर्तमान समय में जनसाधारण की ज्योतिष के प्रति रूचि के कारण जन्म समय लगभग सही प्राप्त हो रहा है। कृष्णमूर्ति जी इस समस्या से परिचित थे। अतः उन्होनें Ruling Planet [3,11,12] की अवधारणा प्रस्तुत की। किसी समय विशेष के शासक ग्रह (Ruling Planet) निम्न होगें।

1. लग्न का स्वामी
2. चन्द्रमा का नक्षत्र स्वामी
3. चन्द्रमा का राशि स्वामी
4. वारेश

कृष्णमूर्ति जी ने उपरोक्त को शासक ग्रह कहा। वर्तमान में लग्न के नक्षत्र स्वामी को भी शासक ग्रह के रूप में लिया जाता है। जन्म के समय की शुद्धता के लिये निम्न प्रेक्षण किये जा सकते है।

1. फलित के समय के शासक ग्रहो और जन्म में शासक ग्रहों में समानता होनी चाहिये विशेष रूप से लग्न स्वामी, चन्द्रमा के राशि स्वामी और नक्षत्र स्वामी के स्तर पर।
2. जन्म कुण्डली के चन्द्र का सबलार्ड या चन्द्र का नक्षत्रलार्ड लग्न का सबलार्ड हो।
3. जन्म कुण्डली में चन्द्रमा जिस उपनक्षत्र पर हो, उस उपनक्षत्र स्वामी के नक्षत्र में जो ग्रह हो वह लग्न का सबलार्ड हो।

जन्म समय की शुद्धता की जॉच हेतु और भी तरीके है। Birth Time Rectification (B.T.R.) अपने आप में ज्योतिष का महत्वपूर्ण विषय है।

5. निष्कर्ष

कृष्णमूर्ति पद्वति के मूल नियम कही भी परम्परागत ज्योतिष के मूल भूत तत्वों का छेदन नही करते वरन् उनको एक नया आधार, व्याख्या और विस्तार देते है। इस पद्धति में सूचको के माध्यम से घटना (यदि कुण्डली में इसकी सम्भावना है) तो दशा, अन्तर, प्रत्यन्तर को निर्धारित किया जाता है। सूर्य के गोचर से मास एवं चन्द्र के गोचर से दिन, चन्द्रमा के नक्षत्र से लग्न एवं सबलार्ड से लग्न तक का निर्धारण किया जा सकता है। इस पद्धति से फलादेश करने से पूर्व जन्म समय शुद्धि अति आवश्यक है।
''आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विष्वत : ''

6. सन्दर्भ

1. Krishnamurti KS. Casting the Horoscope, First Reader, 12th Edition, K. Subramaniam Krishman and Co, Chennai, 2009.
2. Krishnamurti KS. Fundamental Principles of Astrology, Second Reader, 12th Edition, Krishnamurti Publication, Chennai, 2009.
3. Krishnamurti KS. Predictive Stellar Astrology, Reader 3, Krishnamurti Publication, Chennai, 2009.
4. Krishnamurti KS. Marriage, Married Life and Chidren, Fourth Reader, 13th Edition, Krishnamurti Publication, Chennai, 2011.
5. Krishnamurti KS. Transit, Reader 5, Krishnamurti Publication, Chennai, 2009,
6. Krishnamurti KS. Horary Astrology, Sixth Reader, Twelth Edition, Krishnamurti Publication, Chennai, 2009.
7. Bhatt CR, Nakshtra Chintamani. First Edition, Sri Vivek Education Trust, Ahmedabad, 1980.
8. Bhatt CR. Further Light on Nakshtra Chintamani, First Edition, Sri Vivek Education Trust, Ahmedabad, 1980.
9. Bhatt CR, Prashna Jyotish. First Edition (Translation), K.B. Bosmia, Ahmedabad, 2013.
10. Bhatt CR, Jyotish Abhigyan. First Edition (Translation), K.B. Basmia, Ahmedabad, 2017.
11. सुरेश शहासने, कृष्णमूर्ति ज्योतिष रहस्य, भाग–1, द्वितीय आवृत्ति श्री गणेश प्रकाशन, मुम्बई, 2009.
12. सुरेश शहासने, कृष्णमूर्ति ज्योतिष रहस्य, भाग–2, द्वितीय आवृत्ति श्री गणेश प्रकाशन, मुम्बई, 2009.

13. Hariharan K. Role of Significators on Steller Astrology, 7th Edition, Krishnamurti Publication, 2016.
14. Hariharan K. KP Cusp Sublord and its Significance, Krishnamurti Publication, 2016.
15. Hariharan K. Krishnamurti Pahadhati, Second Edition, Krishnamurti Publication, 2006.